

विस्थापन एवं मानसिक स्वास्थ्य

डॉ. चक्रपाणि उपाध्याय

व्याख्याता, समाजशास्त्र राजकीय महाविद्यालय, प्रतापगढ़

मानव अपने जीवन-काल में किसी-न-किसी निश्चित देश, स्थान, जाति, संप्रदाय से जुड़ा रहता है। सामान्यतया ये भौगोलिक परिस्थितियाँ और सामाजिक परिवेश उसकी जीवन शैली और जीवन यापन को निर्धारित करते हैं। यही परिवेश उसका सुविधा क्षेत्र बनता है, जो मानसिक शांति, संतोष व आनंद का कारक है। इनसे इतर उसे मानसिक संताप और द्वंद्व से नित्य प्रति सामना करना पड़ता है। ऐसी ही सुविधा क्षेत्र से बाहर जीने के लिए वह तब विवश हो जाता है जब उसे जबरन विस्थापित कर दिया जाए (फार्मर, पी. 2004)। फिर चाहे यह विस्थापन किसी भी उन्नत अथवा हितकारी प्रयोजन के लिए ही क्यों ना हो। विस्थापन से व अन्यत्र पुनर्वासन से इनके सम्पूर्ण जीवन व विशेषकर स्वास्थ्य पर ऋणात्मक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देते हैं।

इस शोधपत्र में आदिम जाति के देशज संरक्षण शरणार्थी 'सहरिया', जो केंद्रीय भारत के कूनो - पालपुर वन्यजीव अभयारण्य से पर्यावरण परिस्थितिकी तंत्र के नाम पर विस्थापित किए गए हैं, का अध्ययन प्रस्तुत है। मानव विस्थापन की मानसिक पीड़ा का मूल्य, विस्थापन से जुड़े परिवर्तन जनित भावनात्मक कष्ट, प्राकृतिक खानपान व आजीविका के लुप्त होने की यंत्रणा, अपने घर-संसार के उजड़ जाने व नवीन जीवन शैली से सामंजस्य के अभाव की कीमत ये जीवन पर्यंत चुका कर भी आनंद व उल्लास के भाव से परिचय खो देते हैं। शोध से ज्ञात हुआ है कि अपना घर खोने के दर्द का किसी भी पुनर्वास कार्यक्रम, जो मात्र आर्थिक क्षतिपूर्ति और आय स्रोत के स्थापन पर आधारित हो, से निवारण संभव नहीं है।

व्यापक स्तरीय विकास परियोजनाओं के कारण स्वतंत्र भारत में लगभग 6 करोड़ की आबादी का विस्थापन हुआ है। इनमें कभी मानव, तो कभी पर्यावरण हितार्थ राजकीय स्तर पर निर्णय ले लिए जाते हैं (माथुर एच एम 2011)। विस्थापित परिवारों व जातियों को क्षतिपूर्ति के नाम पर आंशिक रूप से जमीन व धन देकर अन्यत्र भेज दिया जाता है (काबरा, ए. 2006)। ये मात्र आंशिक प्रतिकर है। यह जमीनी स्तर पर संबद्ध इलाके में निवासरत व्यक्तियों की वित्तीय परेशानियों को कुछ कम करता है, परंतु मानसिक पीड़ा को मरहम नहीं लगा पाता। ऐसे विस्थापित जन, जिन्हें "संरक्षण शरणार्थी" की संज्ञा दी जाती है, प्रायः देशज आबादी के निम्नतम आर्थिक पायदान का वह भाग हैं, जिनका सामान्य जीवन भी विषम व निरंतर चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों से संघर्ष करने में व्यतीत होता है। उनके परंपरागत संसाधनों के उपयोग पर प्रतिबंध से जीवन बहुत प्रभावित हुआ है (माथुर 2011)।

पृष्ठभूमि

प्रस्तुत आख्यान उत्तर-पश्चिम मध्यप्रदेश के शिवपुर जिले में स्थित शुष्क उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन आरक्षित क्षेत्र में घटित हुआ। मध्यावर्ती भारत का यह भू-भाग 1981 में प्रदेशीय वन्यजीव अभयारण घोषित हुआ। जो कुनो-पालपुर वन्यजीव अभयारण्य कहलाया। 90 के दशक के मध्यम में इसे गीर, गुजरात के एशियाई शेरों के स्थानांतरण हेतु प्रस्तावित किया गया। कालान्तर में यहाँ अफ्रीका से चीते बसाने की योजना बनाई गई। इस विचित्र योजना हेतु विचार करते समय नीति निर्णायकों ने उक्त आरक्षित क्षेत्र से मानव बस्तियाँ अन्यत्र स्थानांतरित कर यहाँ शेरों/चीतों की बस्तियाँ बसाने का खाका खींचा। तदनुसार 1998 से 2002 तक अभयारण्य के अंतर्भाग से 24 छोटे गाँव-कस्बे, जिसमें लगभग कुल आठ हजार की आबादी बसी हुई थी को निर्दिष्ट जंगल भूमि से विस्थापित कर दिया गया। नए स्थान में, नए माहौल में, नई प्रकार की भूमि-कृषि पद्धति में वन अनाच्छादित जीवन में ये विस्थापित जन मानसिक साम्यावस्था नहीं स्थापित कर सके। यद्यपि राजकीय सहायता से मकान-बाड़ा बन तो गया तथापि घर नहीं बस सके। ऐसे ही प्रभावितों में एक थे माज़ीरान गाँव के देशज आदिवासी, जिनको विस्थापित करके मूल निवास से बाहर छोड़ दिया गया। ये विस्थापित सहरिया इस अध्ययन के विषय हैं।

शोध प्रारूप व तकनीक

विस्थापन का सहरिया मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन प्रारंभ करने से पूर्व प्रारंभिक नृवंश विज्ञान आधारित सूचना संग्रहण किया। समीपवर्ती राजस्थान के सहरिया क्षेत्र से इन आँकड़ों का तुलनात्मक मिलान किया। इनके आधार पर कूनो क्षेत्र में भौतिक रूप से विस्थापितों के गाँवों का चयन किया। माजीराण ऐसे अनेक गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है। संभाव्य आर्थिक व गैर आर्थिक कारकों का विश्लेषण कर तीन महीनों में, "अपने सुख या दुख किस भाव को अधिक अनुभूत किया है, विस्तार से समझाइए।"

नृवंश-विज्ञान उपरांत सुनियोजित संरचित सर्वेक्षण अमल में लाया गया। जिसमें स्वास्थ्य व सलामती/खुशहाली की जानकारी पारिवारिक मुखिया से प्राप्त की। भावात्मक अनुभवों की सतत श्रृंखला में धनात्मक व ऋणात्मक भावनाओं का परिमाण, अवसाद ग्रसित स्थिति, मनोवैज्ञानिक कार्यपद्धति: इत्यादि सभी का प्रश्नोत्तर द्वारा आकलन किया गया।

ऐसे खुले प्रश्नों की कही व अनकही प्रतिक्रिया रेखांकित की। लंबे समय से परिचय के कारण उत्तरदाताओं को विश्वास हो गया कि कार्यक्षेत्र में टोली शोध प्रयोजन से काम कर रही है। इस प्रकार अपनी जमीन खोने के बाद, समझौते वाली जिंदगी का स्वास्थ्य पर व्यापक प्रभाव का समाजशास्त्रीय व नृजातीय अध्ययन किया। सांख्यिकी व नृवंश वैज्ञानिक तरीकों से प्राप्त आँकड़ों व सूचनाओं का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किए।

सारणी संख्या – 1
स्वास्थ्य

चर	माध्य	प्रमाण विचलन
मानसिक स्वास्थ्य तनाव	1.22	1.14
अनिद्रा	0.62	0.84
उदास	1.13	1.13
बेकार	1.04	1.13
बोझा	1.12	1.50
निराशा	0.91	0.93
अवसाद (युग्म)	5.32	4.18
प्रभाव प्रमाण छाछी	5.12	12.13
खुश (वर्तमान अ विस्थापनपूर्व)	0.87	0.81
सन्तुष्टि (वर्तमान अ विस्थापन पूर्व)	0.69	0.80
बच्चों के भविष्य को लेकर आशावादी	0.88	0.87
आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रमाण	0.99	0.76
सकारात्मक विषयात्मक हाल-चाल/सहेत	3.44	2.31
शारीरिक स्वास्थ्य प्रमाण	1.08	0.79
स्वास्थ्य को लेकर तनाव	1.14	0.79

सारणी संख्या –02
भोजन ए पानी एवं सामाजिक सुरक्षा की स्थिति

चर	माध्य	प्रमाण विचलन
भोजन की असुरक्षा		
भोजन की असुरक्षा	1.49	0.64
खाद्यान्न समाप्त (वास्तविकता)	1.05	0.80
बच्चों के भोजन में कटौती	0.53	0.64
भोजन असुरक्षा (योग)	3.06	1.66
जल की असुरक्षा		
पेयजल (स्वयं)	1.77	0.53
पशुओं हेतु पेयजल	1.54	0.70
योग (पेयजल असुरक्षा)	3.31	1.41 / 1.23
सामाजिक सुरक्षा		
धन	0.90	0.85
स्वास्थ्य समस्या	1.19	0.81
भोजन मांगकर लाये	1.28	0.79
थोड़ा निर्माण कार्य	1.12	0.77
बालकों की देखभाल	0.90	0.78
बालकों की शिक्षा	1.67	0.62
रोजगार की तलाश	0.74	0.80
विवाह समारोह	1.27	0.77
भावनात्मक समस्याएँ	1.12	0.77
सामाजिक सुरक्षा योग	10.18	4.63 / 6.96

निष्कर्ष

प्राप्त तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण यह दर्शाता है कि मानसिक स्वास्थ्य पर व्यापक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। सामान्यतः जनजातीय लोग सदैव प्रसन्नचित रहते हैं। आर्थिक तंगी से कभी भी उनका मानसिक स्वास्थ्य या खुश रहने की प्रवृत्ति में कमी नहीं आती है (गुड बी जे 1996)। भौतिक संसाधन खुशी का आधार कभी भी नहीं रहे हैं।

प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह देखा जा सकता है कि उदासी, स्वयं को बेकार समझना, अपने जीवन को बोझ समझना, निराशा व अवसाद की स्थिति विस्थापन के उपरांत बढ़ी है। घने जंगलों में जीवन यापन करने वाले सहारिया आम जन अब अपने शारीरिक स्वास्थ्य को भी कमतर आंकते हैं। जीवन में तनाव में व्यापक अभिवृद्धि हुई है (स्कूड्डे र टी 2009)। सहारिया लोगों का जीवन संतुष्टि से असंतुष्टि की ओर अग्रसर हुआ है। जीवन के अभिन्न अंग भोजन व जल की सुरक्षा को लेकर आंकड़े दर्शाते हैं कि विस्थापन के उपरांत भोजन की सुरक्षा का अभाव बढ़ा है। पेयजल की असुरक्षा का भाव केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही नहीं वरन् मानसिक कल्याण को भी नकारात्मक रूप से विशेष कर विकासशील विश्व के देशों में प्रभावित करता है (हार्डली, विच, 2009, स्टीवेंसन 2012)। सामाजिक सुरक्षा को लेकर जनजातीय लोगों में चिंता निरंतर बढ़ी है (स्त्रोडग्रास जे 2015)। उनका परंपरागत सामाजिक ताना-बाना बिगड़ा है। विस्थापन के बहुआयामी कारकों यथा सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक पक्ष सभी के प्रभावों की महत्ता को समझने की आवश्यकता है (टालमैन (2015)।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि विस्थापन से मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक सुरक्षा की भावना में कमी आई है। सहारिया जनजातीय देशज लोगों की सांस्कृतिक पहचान पर भी संकट आया है। जीवन में खुशी व संतोष में व्यापक कमी दिखाई दे रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- [1]. फार्मर, पी. 2004 पथोलोजिज ऑफ पावर: हेल्थ, ह्यूमन राइट्स, एंड नई वॉर ओन थे पुअर